(MIJ) 2022, Vol. No. 8, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

Study of the Effect of Language Proficiency and Study Habits on Academic Achievement of Rural and Urban Students

Anita Singh
Vice Principal, Government Girls Inter College Pilibhit

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भाषागत् दक्षता एवं अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती अनीता सिंह
उपप्राचार्य , राजकीय बालिका अन्तर कॉलेज पीलीभीत

ABSTRACT

Objectives of assessment in the language classroom are to measure the understanding of language, the ability to use it in different contexts, and the ability to assess aesthetic aspects. Assessment is an integral part of the learning-teaching process. Therefore, before assessing whether the child has acquired a skill or not, consider whether the child has been repeatedly given different opportunities to acquire that skill. Here are some basic pointers for assessment for classes 1st to 5th which can be modified as per the requirement of the child. By acquiring linguistic proficiency, the student is able to think of his general, specific and individual and group. To acquire linguistic proficiency, their study habits need to be developed through continuous practice. This affects their academic achievement. In the present research, the effect of language proficiency and study habits on academic achievement has been studied. According to research findings, language proficiency does not affect study habits, but study habits have an effect on academic achievement.

सारांश

भाषा की कक्षा में आकलन के उद्देश्य हैं – भाषा की समझ, इसे विभिन्न संदर्भों में उपयोग करने की क्षमता और सौंदर्यपरक पहलू परख सकने की क्षमता का मापन। आकलन सीखने – सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। इसलिए यह आकलन करने से पहले कि बच्चे ने किसी कौशल को प्राप्त किया है या नहीं यह जरूर सोच लें कि अपने उस कौशल को प्राप्त करने के लिए बच्चे को बार – बार अलग तरह के अवसर दिया है या नहीं। यहाँ पर पहली से पांचवीं तक की कक्षाओं के लिए आकलन के कुछ मूलभूत बिन्दु (संकेतक) आपकी सुविधा के लिए दिया जा रहे हैं जिनमें बच्चे की जरूरत के अनुसार बदलाव किया जा सकता है। भाषायी दक्षता प्राप्त कर विद्यार्थी अपने सामान्य विशिष्ट तथा व्यक्तिगत एवं सामूहिक विचार करने में सक्षम होता है। भाषायी दृष्टि से दक्षता हासिल करने के लिए निरंतर अभ्यास द्वारा उनकी अध्ययन आदतों को विकसित करने की आवश्यकता है। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। प्रस्ततु शोध में भाषायी दक्षता एवं अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध निष्कर्षों के अनुसार भाषायी दक्षता का अध्ययन आदत पर प्रभाव नहीं पड़ता किंतु अध्ययन आदतो का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना (Introduction) -

भाषा अपनी बात कहने और दूसरों की बात समझने के माध्यमों (के समूह) का नाम है और यह जरूरी नहीं की भाषा शाब्दिक ही हो या उसमें ध्वनियाँ ही हों। सभी प्राणियों में अपनी आवश्यकतानुसार एक दुसरे से संप्रेषण करने की जन्मजात योग्यता होती है। मानव उन सबसे इसलिए अलग है, क्योंकि वह भाषा का इस्तेमाल केवल संप्रेषण के लिए ही नहीं बल्कि तर्क, कल्पना, विचार और सृजन के लिए भी करता है। मानव का भाषायी विकास उसके जन्म से ही प्रारंभ हो जाता है और जिन्दगी भर जारी रहता है। इस विकास में उसके विकास में आस – पास के लोग, स्थितियां, परिवेश आदि तो महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, उसका स्वयं का योगदान भी कुछ कम नहीं होता इसलिए एक ही माँ की दो संतानों की भाषा इतनी अलग हो पाती है। यह इसलिए कि प्रत्येक मस्तिष्क अपने आस – पास की भाषा को ज्यों का त्यों ग्रहण नहीं कर लेता बल्कि उसे परिवर्धित करके उसमें अपने व्यक्तित्व के रंग भर लेता है। इस प्रकार किसी भी भषा में सामूहिकता के साथ – साथ एक प्रकार के वैयक्तिक विशिष्टता सदैव मौजूद रहती है। विद्यालय के कार्य इन दोनों विशेषताओं के भरपूर विकास के लिए रोचक और सृजनात्मक वातावरण उपलब्ध करवाना है ताकि स्कूल में पढ़ने वले बच्चे किसी फैक्ट्री से निकलने वाले रोबोट न बन जाएँ बल्कि उनमें अपनी व्यक्तिगत विशेषताएं बरक़रार रहें। भाषा मानव-भाव की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन है जिसके अभाव में मानव पशुतुल्य है। व्यापक रूप में विचार विनिमय के समस्त साधनों को भाषा कहते हैं। भाषा ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है। मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास का आधार भाषा ही है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भाव या विचार बोलकर या लिखकर दूसरों तक पहुँचाते हैं। भाषा मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि-समूह है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन किया जा सके। यह विचार विनिमय का प्रमुख साधन है। भाषा शिक्षा प्रदान करने का उत्तम साधन है, अभिव्यक्ति का माध्यम है। इससे बच्चों में सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है। जिस व्यक्ति की भाषा जितनी सशक्त होगी, उतनी ही सशक्त विचार-शक्ति होगी। विचार एवं भाषा का अटूट संबंध है। भारत की अधिकांश भाषाओं की लिपियों का विकास मूलतः ब्राम्ही लिपि से हुआ है। ब्राम्ही का प्रचार भारत में लगभग 350 ई. तक रहा। संसार में अनेकोनेक भाषाएँ तथा बोलियाँ हैं। एक प्रसिद्ध कहावत है –'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार पूरे विश्व में भाषाओं तथा बोलियों की संख्या 2796 हैं।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the study) -

प्रस्तुत लधुशोध निम्न उद्देश्यों पर आधारित है -

1. विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की प्राथमिक अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

4. विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

5. अध्ययन आदत का उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) -

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी -

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भाषागत् दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

3. विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

4. भाषायी दक्षता का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitations of the study)

स्तर – प्रस्तुत शोध में स्तर से तात्पर्य कक्षा 7वीं में अध्ययनरत छात्र छात्राओं से है।

क्षेत्र – प्रस्ततु शोध में पीलीभीत के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों का चयन क्षेत्र के रूप में किया गया है।

लिंग – प्रस्तुत शोध अध्ययन छात्र एवं छात्राओं पर किया गया है।

शोध प्रक्रिया (Research Process): • न्यादर्श (Sample) - प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

सारणी क्रमांक – 01 चयनित शालाओं की सूची

क्र.	क्षेत्र	विद्यालय का नाम	बालक	बालिका
1	ग्रामीण	राजकीय हाई स्कूल, देवरनिया अमरिया पीलीभीत	25	25
2	ग्रामीण	राजकीय हाई स्कूल, जमुनिया महुआ पीलीभीत	25	25
3	शहरी	राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज पीलीभीत	25	25
4	शहरी	राजकीय हाई स्कूल ,महोफ कॉलोनी, पीलीभीत	25	25
कुल योग -			100	100

उपकरण (Tools) - अध्ययन आदत परीक्षण - एम.एन. पालसन (पुणे) एवं अनुराधा शर्मा द्वारा निर्मित मापनी (PSSHI) प्रकाशन वर्ष - 1989 प्रकाशक - नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन 4/230 कचहरी घाट आगरा-

मापनी का विवरण – इस परीक्षण में कुल 45 कथन हैं प्रत्येक कथन में तीन विकल्प सदैव या बहुधा या कभी नहीं दिये गए हैं छात्र को विकल्प के नीचे बने चौकोर खाने पर सही का निशान लगाना होता है।

भाषायी दक्षता परीक्षण - पूर्व परीक्षण करने के लिए शोधकर्ता द्वारा पूर्व शोधार्थी कु. क्रांति यादव (2007-08) गुरू घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर द्वारा स्वनिर्मित दक्षता परीक्षण मापनी का उपयोग किया गया है। प्रश्नों के उत्तर में एकरूपता हो इसलिए बहुविकल्पीय प्रश्नों का चयन कठिनता स्तर को ध्यान में रखकर किया गया। प्रश्नों में ज्ञानात्मक प्रयोगात्मक, कौशलात्मक, अवबोधात्मक तथ्यों का चयन किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operations): प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण निम्नानुसार किया गया –

परिकल्पना क्रमांक – 01 "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।"

सारणी क्रमांक - 02

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता के परीक्षणों के प्राप्तांकों का सांख्यिकी विश्लेषण

क्र.	विद्यार्थी समूह	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	ग्रामीण	50	20.54	5.17	98	0.020	P> .05 NS
2	शहरी	50	23.16	6.37			

व्याख्या - परिकल्पना क्रमांक 01 के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भाषागत दक्षता के प्राप्तांकों के मध्यमान में ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में शहरी क्षेत्र का मध्यमान अधिक है। इसके मध्य ज्ञात किया कि t का मान 0.020 है जो 0.05 विश्वास स्तर पर स्वतंत्रता की कोटि 98 के सारणीयन मान 1.98 से कम है अतः सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना – 01 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02: "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा"

सारणी क्रमांक – 03

क्र.	विद्यार्थी समूह	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	ग्रामीण	50	20.54	5.17			P> .05
2	शहरी	50	23.16	6.37	98	0.020	NS

व्याख्या – उपरोक्त सारणी में ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का मध्यमान क्रमशः 51. 88 एवं 54.26 है। इससे स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत ग्रामीण विद्यार्थियों से उच्च है। सार्थकता की जाँच हेतु t की गणना की गई जिसका मान 0.137 प्राप्त हुआ जो t के सारणीयन मान 98 स्वतंत्रता के अंश में 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 से कम है। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 02 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03: विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

सारणी क्रमांक - 04

क्र.	विद्यार्थी समूह	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	अध्ययन आदत	100	53.27	8.12			
2	शैक्षिक उपलब्धि	100	37.78	14.91	198	2.623	P> .05 S

व्याख्या – स्वतंत्रता की कोटि के मान 198 के लिए 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है जबकि t का प्राप्त मान 2.623 है जो सारणीकृत मान से ज्यादा है। अतः सार्थक अंतर पाया गया। अतः विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। इसलिए परिकल्पना – 03 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04: "भाषायी दक्षता का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक – 05

क्र.	क्षेत्र	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	भाषायी दक्षता	100	21.85	8.92			
2	अध्ययन आदत	100	37.78	14.91	198	1.693	P< .05 NS

व्याख्या – स्वतंत्रता की कोटि का मान 198 के लिए सारणीयन मान 0.05 में 1.98 है जबकि t का प्राप्त मान 1.69 है जो सारणीकृत मान से कम है। अतः सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अर्थात् भाषायी दक्षता का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। इसलिए परिकल्पना – 04 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05: " ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारणी क्रमांक - 06

क्र.	विद्यालय	छात्रों की संख्या N	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	ग्रामीण	50	41.36	13.75	98	0.025	P< .05 NS
2	शहरी	50	34.20	15.19			

व्याख्या – उपरोक्त सारणी में ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 41.36 एवं शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 34.20 है जो ग्रामीण विद्यार्थियों से कम है। सार्थकता की जाँच हेतु t मूल्य की गणना की गई। गणना से प्राप्त । मूल्य का मान 0.025 है जो कि t मूल्य के सारणीयन मान 98 स्वतंत्रता के अंश तथा 0.05 विश्वास स्तर पर मान 1.98 से कम है। इसका अर्थ यह हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 05 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusions)

1. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भाषागत दक्षता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भाषागत दक्षता तथा शहरी विद्यार्थियों की भाषागत दक्षता लगभग समान पायी गयी।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता
4. भाषायी दक्षता का छात्र-छात्राओं की अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सुझाव (Suggestions)

1. विद्यार्थियों में अध्ययन आदत विकसित करने हेतु कालखंड निश्चित किया जाना चाहिए।

2. विद्यार्थियों की रूचि के अनुसार अध्ययन सामग्री की व्यवस्था विद्यालय प्रबंधन, प्राचार्य एवं कक्षा शिक्षक द्वारा की जानी चाहिए।

3. निम्न अध्ययन आदत के छात्रों को चिन्हांकित कर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च हो सके।

संदर्भ ग्रंथ (References)

1. कौल, एल. (1997)। शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति, नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा। लिमिटेड
2. मेहदी, बी. (1977)। रचनात्मकता, बुद्धि और उपलब्धि। सहसंबंधी अध्ययन। मनोवैज्ञानिक अध्ययन, पीपी.55-62।
3. मॉर्गन (1924), साइकोलॉजी ऑफ पर्सपेक्टिव्स जनवरी वॉल्यूम। 1076 (1)
4. न्यिस्योर। रिगन, दत्ता। जादाब और सोनी। जे सी (2016)। अरुणाचल प्रदेश के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की खुफिया, रचनात्मकता और अकादमिक उपलब्धि पर अध्ययन, मनोविज्ञान और शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत और मासिक सहकर्मी संशोधित जर्नल, आईएसएसएन: 2321-8606, खंड 3, अंक। 8, पीपी. 50-72.
5. पांडे, आर.सी. (1981)। ग्रामीण-शहरी पृष्ठभूमि, लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और औपचारिक शिक्षा से संबंधित रचनात्मकता का अध्ययन। अप्रकाशित डॉक्टरेट शोध प्रबंध, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, 1981. पी.201-218।
6. शर्मा, के. (1982)। रचनात्मकता से संबंधित कारक। सामाजिक विज्ञान में डॉक्टरेट शोध प्रबंध, आई.आई.टी. दिल्ली। M.B.Buch IVth सर्वे में उद्धृत।

REFERENCES

1. Kaul, L., (1997), Shaikshik Anusandhan ki Paddhati, New Delhi: Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
2. Mehdi, B., (1977), Rachnatmak, Buddhi aur Uplabdhi, Sahsambandhi Adhyayan, Manovaigyanik Adhyayan, pp 55-62
3. Morgan (1924), Psychology of Perspectives, January Volume, 1076(1)
4. Nisyor, Rigen Dutta, Jadab and Soni, J.C. (2016), Arunachal Pradesh ke Madhyamaik Vidyalya ke Chhatron ki Khufiya, Rachnatmakta aur Academic Uplabdhi par Adhyayan, International Journal of Psychology and Education, An Internationally Accepted and Monthly Peer Revised Journal, ISSN: 2321-8606, Volume 3, Vol. 8, pp. 50-72.
5. Pandey, R.C. (1981), Grameen-Shahri Prishthbhoomi, Ling, Samajik-Arthik Sthiti aur Aupcharik Shiksha se Sambandhit Rachnatmakta ka Adhyayan, Unpublished doctoral dissertation, Kumaun University, Nainital, 1981. p.201-218.
6. Sharma, K. (1982), Rachnatmakta se Sambandhit Karak, Doctoral Dissertation in Social Sciences, IIT Delhi. Quoted in M.B.Buch IVth Survey.